प्रसार फोल्डर संख्या : 84/2021

पूर्वी भारत हेतु गेहूँ की नवीनतम् उत्पादन तकनीकियाँ

सम्पादन एवं संकलनः

चन्द्रनाथ मिश्र, उमेश काम्बले, अमित शर्मा, आर.एस. छोकर, ज्ञानेन्द्र सिंह एवं जी.पी सिंह

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल - 132001, भारत

उत्पादन क्षेत्र – पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल (पहाडियों क्षेत्रों के अतिरिक्त), ओडिशा, असम और उत्तर पूर्वी राज्यों के मैदानी इलाके।

किस्मों का चुनाव

उत्पादन स्थिति	बुआई का समय	नवीन किस्में
सिंचित उत्पादन स्थिति	समय से बुआई (5–25 नवम्बर)	करण वंदना (डीबीडब्ल्यू 187), एचडी 3086, एचडी 3249, एचडी 2967, एनडब्ल्यू 5054, के 1006 एवं राज 4120
	विलम्ब से बुआई (10–25 दिसम्बर)	डीबीडब्ल्यू 107. एचडी 3118, एवं एचआई 1563
	अतिविलम्ब से बुआई (1–15 जनवरी)	एचआई 1621 एवं एचडी 3271
सीमित सिंचाई / वर्षा आधारित	20 अक्तूबर से 5 नवम्बर	करण श्रिया (डीबीडब्ल्यू 252), एचआई 1612, के 1317 एवं एचडी 3171
लवणीय एवं क्षारीय भूमि के लिए	समय से बुआई (5–25 नवम्बर)	केआरएल 213 एवं केआरएल 210

बीज दर

- समय से बुवाई – 40 किलो ग्राम प्रति एकड़।
- विलम्ब एवं अतिविलम्ब से बुवाई – 50किलो ग्राम प्रति एकड़।

पंक्तिबद्ध बुआई

- पंक्ति से पंक्ति की दुरी समय से बुआई के लिए 20 से.मी. तथा देरी से बुआई के लिए 18.0 से.मी. रखें।
- पोषक तत्वों का समुचित उपयोग।
- फसल अपेक्षाकृत कम गिरती है।
- छिटकवा विधि का अपेक्षा 1500 रूपए प्रति एकड़ का लाभ।

शुन्य जुताई विधि (जीरो टिलेज)

- गेहुँ की बुआई 7 से 10 दिन शीघ्र कर सकते हैं।
- जुताई पर होने वाले खर्च में 1500 रूपए / एकड़ की बचत।
- उपज में 1.2 प्रतिशत की वृद्धि।
- इस विधि से गेहुँ की समय से बुआई होने के कारण पारंपरिक विधि की तुलना में 2000–2500 रूपए प्रति एकड़ का लाभ।

लेजर लैंड़ लेवलर से भूमि का समतलीकरण

- सिंचाई जल की उपयोगिता में वृद्धि के कारण 15–20 प्रतिशत जल की बचत 3–4 साल में एक बार समतलीकरण कराना चाहिए।

पोषक तत्व प्रबंधन

समय से बुआई

- 75 किलोग्राम/एकड़ एनपीके – 12 : 32 : 16 अथवा 50 किलोग्राम डीएपी + 25 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ बुआई के समय डालें ।
- 55 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ प्रथम सिंचाई पर ।
- 55 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ दूसरी सिंचाई पर ।

विलम्ब एवं अतिविलम्ब से बुआई

- 75 किलो ग्राम एनपीके – 12 : 32 : 16 अथवा 50 किलोग्राम डीएपी + 25 किलो ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश बुआई के समय ।
- 40 किलोग्राम यूरिया प्रथम सिंचाई पर ।
- 40 किलोग्राम यूरिया दूसरी सिंचाई पर ।

सीमित सिंचाई

- 75 किलोग्राम एनपीके – 12:32 : 16 + 30 किलो ग्राम यूरिया अथवा 50 किलो ग्राम डीएपी + 25 किलो ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश + 30 किलो ग्राम यूरिया बुआई के समय ।
- 30 किलो ग्राम यूरिया प्रथम सिंचाई पर ।

सूक्ष्म पोषक तत्व

- बोरॉन : 4.0 कि.ग्रा. बोरेक्स प्रति एकड़ ।
- जिंकः 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) प्रति वर्ष प्रति एकड़ बुआई के समय या 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट (1.0 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट. 5.6 कि.ग्रा. यूरिया को 200 लीटर पानी घोल बनाकर) फसल की बुआई के 35 से 40 दिन बाद छिड़काव करना चाहिए ।
- 4 से 5 वर्ष में एक बार मिट्टी एवं सिचाई जल की जाँच अवश्य करायें।

सिंचाई प्रबंधन

सिंचाई की उपलब्धता	बुआई के बाद सिंचाई (दिनों में)
दो	21,85
तीन	21,65,105
चार	21,45,85,105
पाँच	21,45,65,85,105

खरपतवार प्रबंधन

- गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडिमैथिलिन 30 ईसी नामक दवा 1.5 लीटर प्रति एकड़ की दर से बुआई के 3 दिन के भीतर तक छिड़काव करें ।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4 – डी 38 ईसी नामक दवा की 500 मि.ली. /एकड़ या मेट्सल्फुरोन (20

डब्ल्यूपी) नामक दवा की 8 ग्राम / एकड़ मात्रा का 120–150 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें ।

- संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए आइसोप्रोटुरोन (75डब्ल्यूपी) 400–500 ग्राम या सल्फोसल्फयूरॉन (75डब्ल्यूडीजी) 13.5 ग्राम या क्लोडिनाफोप 15 डब्ल्यू पी 160 ग्राम या पिनोक्साडेन (5ईसी) 400 मि.ली. /एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए ।

प्रकाशक :-

डा. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल - 132001, भारत

ICAR- Indian Institute of Wheat & Barley Research Karnal-132001

www.iiwbr.icar.gov.in